17 सितम्बर 2007, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन

पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

राग-द्वेष कम करने का सरलतम उपाय अपने सुख-दु:ख के कारण अपने में ही खोजना है, मानना है, जानना है।

ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-25

वर्ष : 30, अंक : 12 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

सितम्बर (द्वितीय), 2007 प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

व्याख्यानमाला सम्पन्न

मुम्बई (महा.) : यहाँ दिनांक 8 सितम्बर से 15 सितम्बर 2007 तक जैन अध्यात्म स्टडी सर्किल द्वारा आयोजित आठ दिवसीय व्याख्यानमाला सम्पन्न हुई।

व्याख्यानमाला का आयोजन मुम्बई शहर के भारतीय विद्या भवन चौपाटी, वालकेश्वर, सी. पी. टैंक, दादर, चिंचबंदर, चिंचपोकली, घाटकोपर, ताड़देव इत्यादि स्थानों पर हुआ।

इसमें डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित कस्तूरचंदजी भोपाल, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री मुम्बई एवं पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री राजकोट इत्यादि विद्वानों के विभिन्न विषयों पर व्याख्यानों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

विदेशों में स्मारक के विद्वान

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में ही नहीं, अपितु विदेशों में भी धर्म-प्रचारार्थ श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के विद्यार्थी अपना सहयोग दे रहे हैं। इस बार दशलक्षण महापर्व के अवसर पर **शिकागो** में पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, **ह्यूस्टन** (अमेरिका) में पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, **वाशिंग्टन** (अमेरिका) में पण्डित दिनेशभाई एवं डॉ. उज्ज्वला शाह मुम्बई, **लंदन** में पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट एवं **अफ्रीका** में पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर धर्मप्रभावनार्थ जा रहे हैं।

शिविर सानन्द सम्पन्न

01.**कारंजा (लाड-महा.) :** यहाँ श्री महावीर ज्ञानोपासना समिति एवं महावीर ब्रह्मचर्य आश्रम ट्रस्ट तथा दिगम्बर जैन शेनगण मंदिर की ओर से दिनांक 10 से 19 अगस्त तक आध्यात्मिक स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित मानमलजी कोटा तथा स्थानीय विद्वान पण्डित धन्यकुमारजी भोरे एवं विदूषी विजयाताई भिसीकर कारंजा के समयसार ग्रंथाधिराज के कर्ताकर्माधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुए।

शिविर का उद्घाटन समारोह मंदिर के अध्यक्ष देवकुमारजी बवरे की अध्यक्षता तथा समापन कारंजा के विधायक राजेन्द्रकुमारजी पाटनी की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। शिविर में लगभग 375 शिविरार्थियों ने धर्मलाभ लिया।

02. **देवलाली (नासिक-महा.) :** यहाँ स्व. श्री मगनलाल जीवनलाल बोटादरा एवं श्रीमती रमीलाबेन मगनलालजी बोटादरा की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री विजयभाई बोटादरा परिवार की ओर से दिनांक 17 से 19 अगस्त,07 तक त्रिदिवसीय ज्ञान शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पूजनादिक कार्यक्रमों के साथ ही प्रतिदिन तीनों समय पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के अतिरिक्त ब्र.हेमचंदजी 'हेम' एवं पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

इस प्रसंग पर रमेशभाई एवं विपिनभाई बड़वाण वालों के द्वारा विशेष भक्ति का आयोजन किया गया। इसके साथ ही बोटादरा परिवार द्वारा गुरुदेव श्री की पुण्यभूमि सोनगढ़ पर आधारित नाटिका की सुन्दर प्रस्तुति दी गयी।

अहिंसा सद्भाव यात्रा का आयोजन

श्री अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत्परिषद् एवं अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ के तत्त्वावधान में 9 से 15 अक्टूबर, 07 तक दिल्ली से काठमाण्डू (नेपाल) तक अहिंसा सद्भावना यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर विद्वत्परिषद् की कार्यकारिणी समिति की बैठक भी महावीर निकेतन काठमाण्डू में रखी गई है, जिसमें विद्वत्परिषद के संरक्षण-संवर्धन के साथ ही समसामायिक विषयों पर भी विचार किया जायेगा।

ह्न अखिल बंसल

कहानी सम्पादकीय

पहले मुनि या मुनीम

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

स्वयं को मुनियों का अनन्य भक्त मानने वाले पण्डित पीताम्बर शास्त्रीय विद्वान् तो नहीं हैं, परन्तु स्थानीय प्रवचनकार होने से उन्हें सब पण्डितजी कहने लगे।

पण्डित पीताम्बर को अध्यात्म शास्त्रों का गहरा अध्ययन और तत्त्व की सूक्ष्म पकड़ भी अभी नहीं है, पर ऐसा विरोध भी नहीं है कि जिससे तत्त्व को सुनना समझना ही ना चाहें, अध्यात्म को जानने की थोड़ी जिज्ञासा भी है; परन्तु पण्डितजी मुनियों के प्रति विशेष आस्थावान हैं। अतः जब भी मुनियों के या आर्यिकाओं के शुभागमन का प्रसंग आता है तो वे भावविभोर होकर मुनि भक्ति की भावना व्यक्त करने से नहीं चूकते।

ठीक भी हैं, जिसको सन्मार्ग में लाने में जो निमित्त बना हो, उसके प्रति बहुमान आना स्वाभाविक ही है और कृतज्ञता ज्ञापनार्थ उनके प्रति यथायोग्य आदर का भाव भी आता ही है, जो आना भी चाहिए।

पण्डित पीताम्बर को किशोर अवस्था में अनेक दुर्व्यसनों ने घेर लिया था। एक चातुर्मास में मुनि संघ के सम्पर्क में आने से मुनिसंघ द्वारा दिये गये सदाचार के उपदेशों से धीरे-धीरे उनके वे दुर्व्यसन तो छूट ही गये, मुनिसंघ द्वारा नियमित स्वाध्याय की प्रतिज्ञा कराने से उस प्रतिज्ञा के निर्वाह हेतु वे नर-नारियों को सामूहिक स्वाध्याय कराने लगे थे। ऐसा करने से उन्हें समाज में सम्मान भी मिलने लगा। इसी कारण विशेष अवसरों पर समाज द्वारा उन्हें अग्रिम पंक्ति में रखा जाने लगा।

ह्न ह्न ह्न

आर्यिका संघ के शुभागमन पर सभी समाज ने पलक पाँवड़े बिछाकर संघ का स्वागत किया। सम्मान समारोह में पण्डित पीताम्बरजी ने अपने व्याख्यान में मुनियों एवं आर्यिकाओं के तप-त्याग को महिमा मण्डित करते हुए कहा ह्न ''**मुनि हुए बिना मुक्ति नहीं।** स्त्री-पर्याय में भी जितना संभव हो सकता है, उसमें आर्यिका का पद सर्वोत्कृष्ट है।

पीताम्बरजी ने आगे कहा ह्न ''यद्यपि उपसर्ग और परीषह मुनियों के मूलगुणों में नहीं है, परन्तु उत्तरगुणों में इनका प्रमुख स्थान है, जिन्हें सहना और जीतना अति कठिन होते हुए भी उपसर्गों को सहते हुए मुनि मन को मलिन नहीं करते और परीषहों को भी सहजता से जीत लेते हैं।''

वस्तुतः प्रथमानुयोग और चरणानुयोग ही पीताम्बरजी के प्रिय विषय हैं; क्योंकि प्रथमानुयोग की वैराग्यवर्द्धक कथायें और चरणानुयोग की चर्चा सुनकर ही उनके जीवन में परिवर्तन आया था। इस कारण वे अपनी शास्त्र सभा में इन्हें ही सुनाया करते हैं। वाणी में माधुर्य और कंठ सुरीला होने से बीच-बीच में वैराग्यवर्द्धक भजन सुनाकर अपने प्रवचनों को रोचक व प्रभावी बनाने की कला में पण्डितजी निपुण हैं।

ह्न ह्न ह्न

दूसरे दिन जब विदुषीरत्न अध्यात्म रसिक आर्यिका माताजी का प्रवचन हुआ तो सर्व प्रथम तो उन्होंने मुनिधर्म की महिमा मण्डित करने के लिए पीताम्बरजी को बधाई दी, परन्तु अगले वाक्य में ही जब आर्यिका माताजी ने पण्डितजी को भाषण में संशोधन करने की सलाह देते हुए कहा कि ह्न ''**पण्डितजी! मुनि बनने के पहले ऐसा मुनीम बनना अनिवार्य है** जो तत्त्वों का लेखा-जोखा रखता है।

आर्यिका माता के उद्‌बोधन में मुनि से पहले मुनीम बनने की बात सुनकर पीताम्बरजी अवाक् रह गये।

उन्होंने साहस बटोरकर आर्यिका माताजी से पूछा ह्न ''**मुनि से पहले मुनीम बनने से** आपका क्या तात्पर्य है? मैं कुछ समझा नहीं। कौनसे तत्त्वों का हिसाब रखना पड़ता है, थोड़ा विस्तार से बतायें, ताकि मैं समझ सकूँ।''

माताजी ने पण्डितजी का समाधान करते हुए समझाया ह्न ''यहाँ अध्यात्म में मुनीम का अर्थ किसी लौकिक सेठ की रोकड़ बही लिखने और रुपयों के लेन-देन का हिसाब-किताब करने की नौकरी करना नहीं है; अपितु अपने आत्मा के लक्ष्य से बने लक्षपति चिन्मय सेठ की सेवा में रहकर द्रव्य-गुण-पर्याय और जीवादि सात तत्त्वों के खातों का सही लेखा-जोखा रखने से हैं।

एक तत्त्व को दूसरे में न मिलाकर जीव को ही जीव जाने, शरीर आदि अजीव को जीव न माने, आस्रव तत्त्व का आय-व्यय आस्रव के खाते में ही जमा-खर्च हो एवं संवर-निर्जरा तत्त्व द्वारा हुए कर्मों के व्यय का हिसाब उन्हीं के खर्च खाते में लिखा जावे। पुण्यास्रव एवं पुण्यबंध कर्म हैं, इनकी आय को धर्म के खाते में भूलकर भी न जमा किया जावे। तत्त्वों के इस लेखे-जोखे में निपुण होना ही अध्यात्म की मुनीमी है। इस मुनीमी से ही मुनि बनने की योग्यता आती है।

देखो, जैसे लौकिक मुनीमों में तीन गुण होते हैं। प्रथम तो वह लेन-देन का सही हिसाब रखने में कुशल एवं ईमानदार होता है। दूसरे, वह सेठ की सम्पत्ति का स्वयं स्वामी नहीं बनता; तीसरे, सेठ के मुनाफे-घाटे में हर्ष-विषाद करता दिखाई देता है, पर दिल से सुखी-दुःखी नहीं होता; क्योंकि श्रद्धा में तो सेठ के माल को पराया ही मानता है। ऐसा मुनीम सेठ का विश्वास प्राप्त कर एवं व्यापार में कुशलता प्राप्त कर एक दिन स्वयं सेठ बन जाता है।

ठीक इसी तरह मोक्षमार्ग में मुनि बनने से पहले सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की तथा अपने-पराये की यथार्थ पहचान हो, स्व-पर भेद विज्ञान हो, सातों तत्त्वों में हेय-उपादेय-ज्ञेय का विवेक हो, वस्तुस्वातंत्र्य एवं सर्वज्ञ स्वभावी आत्मा की रुचि हो। मुनिधर्म अंगीकार करने के पहले ऐसा हिसाब-किताब रखने वाला मोक्षमार्ग का मुनीम होता है। ऐसा सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की शरण में रहने वाला मुनीम आत्म साधना का व्यापार करते-करते एक दिन स्वयं मुनि बन जाता है।''

आर्यिका माताजी का अध्यात्म रस से ओत-प्रोत तत्त्वोपदेश सुनकर श्रोताओं को **मुनि से पहले मुनीम बनने** का मार्गदर्शन मिला, उससे सभी श्रोता कृतार्थ हो गये। ●

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में
पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा आयोजित
दसवाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

(बुधवार, दिनांक १७ अक्टूबर से शुक्रवार, दिनांक २६ अक्टूबर २००७ तक)

आपको सूचित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किये जाने वाले शिविरों की शृंखला में दसवाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर आगामी १७ अक्टूबर से २६ अक्टूबर २००७ तक अनेकानेक आध्यात्मिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।

इस शिविर में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित सुदर्शनजी जैन बीना, पण्डित प्रकाशचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री रहली, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री राजकोट, कु. अनुप्रेक्षा जैन मुम्बई आदि अनेक विद्वानों का व्याख्यानों एवं प्रवचनों के माध्यम से लाभ मिलेगा। शिविर में सपरिवार इष्ट-मित्रों सहित पधारने हेतु सादर आमंत्रण है।

झण्डारोहण एवं उद्घाटन समारोह
बुधवार, १७ अक्टूबर ०७ को प्रात: ८.०० बजे से
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं भारतवर्षीय वी. वि. पाठशाला समिति का अधिवेशन
रविवार, २१ अक्टूबर को दोपहर २.३० बजे से

भवदीय

सुशीलकुमार गोदीका — अध्यक्ष
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल — महामंत्री

एवं समस्त ट्रस्टीगण पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर

छात्रों की तिजारा-यात्रा

जयपुर : दिनांक 26 अगस्त, 07 को श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के समस्त (170) छात्रों को जयपुर से अतिशय क्षेत्र तिजारा (अलवर) ले जाया गया। जहाँ प्रात: शांति विधान का आयोजन किया गया।

इसी अवसर पर महाविद्यालय के छात्रों द्वारा **द्रव्य-गुण-पर्याय** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता श्री एम.एल. जैन जवाहर नगर ने की। इस अवसर पर ब्र. यशपालजी जैन एवं पण्डित शांतिकुमारजी पाटील का सान्निध्य मिला। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग से संयम जैन एवं शास्त्री वर्ग से विवेक जैन सागर को चुना गया।

सायंकाल तिजारा से लौटते समय नवनिर्मित रत्नत्रय जिनालय चेतन एन्क्लेव, अलवर में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के प्रवचनोपरान्त जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन किया गया। युवा फैडरेशन द्वारा यात्रा संघ का स्वागत किया गया। विराट नगर की नसियां में दर्शन एवं भक्ति का आयोजन हुआ।

ज्ञातव्य है कि यात्रा का सम्पूर्ण आयोजन श्री ब्रजमोहनजी विनोदजी जैन एवं श्री सुशीलजी जैन के आर्थिक सहयोग एवं भावना से किया गया।

मथुरा में पंचकल्याणक की तैयारियाँ जोरों पर

मथुरा : अन्तिम श्रुत केवली श्री जम्बूस्वामी के 25सौंवे निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में यहाँ ग्रेनाइट पत्थर से नवनिर्मित श्री जम्बूस्वामी की 18 फुट उत्तंग विश्व की महानतम पद्मासन प्रतिमा का पंचकल्याणक महोत्सव दि. 24 से 28 फरवरी तक तथा महामस्तकाभिषेक समारोह 1 से 7 मार्च 2008 तक सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज के ससंघ पावन सान्निध्य में श्री क्षेत्र चौरासी में सम्पन्न होने जा रहा है। इस समारोह को गरिमापूर्ण भव्यता प्रदान करने हेतु राष्ट्रीय स्तर पर अन्तिम श्रुत केवली श्री जम्बूस्वामी 25 सौवाँ निर्वाण महोत्सव समिति का गठन किया गया है, जिसके अध्यक्ष ह्न डॉ. त्रिलोकचन्द कोठारी दिल्ली, कार्याध्यक्ष ह्न श्री विजय सेठ मथुरा, महामंत्री ह्न श्री मदनलालजी बैनाड़ा आगरा, मंत्री ह्न श्री सतीश जैन (आकाशवाणी) दिल्ली को बनाया गया है। शेष पदाधिकारियों की घोषणा शीघ्र की जा रही है। आचार्य श्री के निर्देश पर पूज्य उपाध्याय श्री निर्णयसागरजी चातुर्मास हेतु ससंघ क्षेत्र पर विराजमान हैं और उनके निर्देशन में पंचकल्याणक महोत्सव की तैयारियाँ जोरों पर चल रही हैं। स्मरणीय है कि यहाँ दि. 11 नवम्बर, 07 को अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ का द्वितीय राष्ट्रीय सम्मेलन भी आयोजित है।

ह्न अखिल बंसल, *प्रचार संयोजक*

तिथि दर्पण

तिथि दर्पण

तत्त्वचर्चा

छहढाला का सार 14

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

आत्मा के कल्याण में यह कर्तृत्व का अभिमान ही सबसे बड़ी बाधा है। न केवल जैनधर्म में, अपितु लगभग सभी दर्शनों में इस कर्तृत्व के अभिमान पर चोट की गई है।

हिन्दू कहते हैं कि राम की मर्जी के बिना पत्ता नहीं हिलता, मुसलमानों के यहाँ भी खुदा की मर्जी के बिना पत्ता नहीं हिलता और ईसाईयों के पत्ते गॉड हिलाता है।

सभी धर्म वाले यह तो कहते ही हैं कि तेरे हाथ में कुछ नहीं है। '**हुइये वही जो राम रचि राखा।**' राम ने जो सोच रखा है, होगा तो वही। तेरे करने से कुछ नहीं होगा।

यह जो कर्तृत्व का अभिमान है, वह सबसे बड़ी समस्या है। सभी धर्मवाले इस अभिमान को तोड़ना चाहते हैं। हिन्दू धर्म में तो यहाँ तक आता है कि भगवान भक्त का सबकुछ बर्दाश्त कर सकते हैं, भक्त उनकी छाती पर लात मार दें तो भी बर्दाश्त कर सकते हैं; लेकिन भक्तों के कर्तृत्व का अभिमान बर्दाश्त नहीं कर सकते।

मेरी यह बात सुनकर एक लड़का बोला ह्न

''आप कुछ भी कहो, पर हम तो लड़की को अच्छी तरह देखे बिना शादी नहीं करेंगे। जब हम दस रुपये की हाँडी खरीदते हैं तो ठोक-बजाकर लेते हैं; यह तो जिन्दगी भर का सौदा है।''

मैंने प्रेम से समझाते हुए उससे कहा ह्न

''क्या माँ-बाप का संबंध जिन्दगी भर का नहीं है। यदि है तो तुमने यह काली-कलूटी माँ कैसे पसन्द कर ली ?''

तब वह कहता है ह्न ''इसमें मेरी क्या गलती है ? यह तो पापा की गलती है।'' मैंने कहा ह्न ''यह गलती पापा की ही सही, पर तू बाल-बच्चे तो एक से एक बढ़िया चुन-चुनकर पैदा करना।''

''वे भी जैसे होंगे, हो जायेंगे; उसमें भी मैं क्या कर सकता हूँ?''

''माँ-बाप, भाई-बहन, बेटा-बेटी जैसे मिल जायें, चलते हैं; पर एक पत्नी ही ऐसी है कि जिसमें तू अपनी पूरी अक्ल लगा लेगा।''

बात को आगे बढ़ाते हुये मैंने कहा ह्न ''जाओ बेटा ! देख आओ। मात्र देखना, ठोकना-बजाना नहीं; नहीं तो ठुक-पिटकर आओगे। अपनी पत्नी की तुलना दस रुपये की हांडी से करते हो, शरम नहींआती।

जिन्होंने शादी होने के पहिले पत्नी को देखा भी नहीं था, ऐसे भी लोग अभी जिंदा हैं। उनकी जिंदगी बहुत शान्ति से निकल गई; पर ठोंक-बजाकर देखनेवालों की जिंदगी दो-चार साल भी नहीं चल पाती है और तलाक का नम्बर आ जाता है। तुम चाहे जितनी अकल लगा लेना; पर मिलेगी तो वही, जो पहले से सुनिश्चित है।''

सर्वज्ञता के साथ क्रमबद्धपर्याय पूरी तरह गुथी हुई है। यदि हम पर्यायों के सुनिश्चित क्रम अर्थात् क्रमबद्धपर्याय को स्वीकार नहीं करेंगे तो अरहंत और सिद्ध भगवान की सर्वज्ञता पर भी प्रश्नचिह्न खड़ा हो जायेगा। उक्त सन्दर्भ में विशेष जानने की इच्छा हो तो लेखक की अन्य कृति 'क्रमबद्धपर्याय' का स्वाध्याय करना चाहिये।

इसके बाद सम्यग्ज्ञान की महिमा बताते हुये कहा है ह्न

ज्ञान समान न आन जगत में, सुख को कारन।
इह परमामृत जन्म-जरा-मृतु रोग निवारण।।
कोटि जन्म तप तपैं, ज्ञान बिन कर्म झरैं जे।
ज्ञानी के छिन माहिं, त्रिगुप्ति तैं टरैं ते।।
मुनिव्रत धार अनन्त बार, ग्रीवक उपजायो।
पै निज आतम ज्ञान बिना, सुख लेश न पायो।।

इस जगत में ज्ञान के समान अन्य कोई पदार्थ सुख का कारण नहीं है। यह ज्ञान जन्म, जरा और मृत्युरूपी रोग निवारण करने के लिये परम अमृत है।

आत्मज्ञान के बिना करोड़ों जन्मों में निरन्तर तप करते रहने पर जितने कर्म झड़ते हैं; उतने कर्मों को ज्ञानी जीव त्रिगुप्ति के बल से क्षणभर में नष्ट कर देते हैं। यद्यपि यह आत्मा मुनिव्रत धारण करके अनन्त बार अन्तिम ग्रैवेयक तक में उत्पन्न हुआ, तथापि आत्मज्ञान के बिना रंचमात्र भी सुख प्राप्त नहीं किया।

वैमानिक देवों के रहने के स्थानों में सोलह स्वर्गों के ऊपर नौ ग्रैवेयक होते हैं। मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंगी मुनिराज अधिक से अधिक वहाँ तक ही जाते हैं; उसके आगे नहीं।

इसके बाद आत्महित कर लेने की प्रेरणा देते हुये लिखते हैंह्न

तातैं जिनवर कथित, तत्त्व अभ्यास करीजै।
संशय विभ्रम मोह त्याग, आपौ लख लीजै।।
यह मानुष पर्याय, सुकुल सुनिवौ जिनवाणी।
इह विधि गये न मिलै, सुमणि ज्यों उदधि समानी।।
धन समाज गज बाज, राज तो काज न आवै।
ज्ञान आपको रूप भये, फिर अचल रहावै।।
तास ज्ञान को कारण, स्व-पर विवेक बखानो।
कोटि उपाय बनाय, भव्य ताको उर आनो।।

इसलिये जिनेन्द्रदेव द्वारा बताये गये तत्त्वज्ञान को प्राप्त करने का अभ्यास निरन्तर करना चाहिये और संशय, विभ्रम और मोह का त्याग करके अपने आत्मा का अनुभव कर लेना चाहिये।

कवि **करीजे** और **लीजे** कहकर एक प्रकार से आदेश ही दे रहे हैं।

विभ्रम को विपर्यय और मोह को अनध्यवसाय भी कहते हैं। संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय ज्ञान के दोष माने गये हैं।

आत्मा की सत्ता (अस्तित्व) में या स्वरूप में संशय होना संशय नामक दोष है। 'आत्मा है या नहीं' ह्न यह आत्मा के अस्तित्व (सत्ता)

के बारे में शंका है और 'आत्मा मात्र ज्ञानस्वभावी ही है अथवा राग-द्वेष-मोहवाला भी है' ह्न यह स्वरूप के संबंध में शंका है।

आत्मा के अस्तित्व और स्वरूपादि के बारे में एकदम उल्टा निर्णय कर लेना विपर्यय नामक दोष है। 'आत्मा है ही नहीं' या 'आत्मा राग-द्वेष वाला ही है' ह्न ऐसा निश्चय कर लेना विपर्यय दोष है।

आत्मा के सम्बन्ध में उपेक्षाभाव अनध्यवसाय है। 'आत्मा होगा तो होगा और नहीं होगा तो नहीं होगा; अथवा जैसा भी होगा ह्न हमें क्या करना है, इस व्यर्थ की माथापच्ची से हमें क्या लेना-देना है ? ह्न इसप्रकार का उपेक्षा भाव अनध्यवसाय है।

आत्मा के सन्दर्भ में उक्त दोषों से रहित आत्मानुभूतिपूर्वक सम्यक् निर्णय होना ही सम्यग्ज्ञान है।

अन्त में कहते हैं कि हे भाई ! दुर्लभ मनुष्यपर्याय, सदाचार सम्पन्न उच्च कुल और जिनवाणी सुनने को मिलना, रुचिपूर्वक पढ़ना-सुनना ह्न यह सब अभी तुझे सहज संयोग से प्राप्त हो गया है; अत: सहज प्राप्त संयोग को सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र प्राप्त किये बिना यों ही गवाँ देना समझदारी का काम नहीं है; क्योंकि यह सब एक बार गया सो गया, फिर मिलना सागर में फेके चिन्तामणि रत्न के समान अत्यन्त दुर्लभ है।

ये हाथी-घोड़े, धन-संपत्ति, समाज और राज कुछ काम आने वाले नहीं हैं। यदि तुमने सम्यग्ज्ञान प्राप्त कर लिया, केवलज्ञान प्राप्त कर लिया तो वह सदा ही अचल रहेगा, कभी भी चलायमान नहीं होगा। उस सम्यग्ज्ञान या केवलज्ञान की प्राप्ति का उपाय स्व और पर में भेद जानना है, अपने और पराये की पहिचान करना कहा गया है।

इसलिए हे भव्यजीवो ! करोड़ों उपाय करके भी उस भेद-विज्ञान को प्राप्त करने का पुरुषार्थ करने की बात हृदय में ठान लो।

उक्त भेदज्ञान की महिमा बताते हुये आगे कहते हैं ह्न

जे पूरब शिव गये, जाहिं अरु आगे जेहैं।
सो सब महिमा ज्ञानतनी, मुनिनाथ कहै हैं ।।
विषय चाह दव दाह, जगत जन अरनि दझावै।
तास उपाय न आन, ज्ञान घनघान बुझावै ।।
पुण्य-पाप फल माहिं, हरख बिलखौ मत भाई।
यह पुद्‌गल परजाय, उपजि विनसै फिर थाई ।।
लाख बात की बात, यहै निश्चय उर लाओ।
तोरि सकल जग दन्द-फन्द, निज आतम ध्याओ ।।

जो जीव भूतकाल में मोक्ष गये हैं, अभी जा रहे हैं और भविष्य में जायेंगे; वे सब भेदविज्ञान या सम्यग्ज्ञान के प्रताप से ही गये हैं। यह सब ज्ञान की ही महिमा है ह्न ऐसा मुनियों के नाथ अरहंत भगवान कहते हैं। पंचेन्द्रिय विषयों की चाहरूपी दावाग्नि से जगतजनरूपी जंगल जल रहा है; उस भयंकर अग्नि को ज्ञानरूपी मेघों की वर्षा ही बुझा सकती है।

अरे भाई ! पुण्य के फल में प्रसन्न होना और पाप के फल में बिलखना छोड़ो; क्योंकि यह सब तो पुद्‌गल का परिणमन है, जो उत्पन्न होता है, वह नष्ट होता है और फिर उत्पन्न हो जाता है।

लाख बात की एक बात तो यह है कि निश्चयनय द्वारा निरूपित आत्मा में अपनापन स्थापित करो और इस जगत के सम्पूर्ण दन्द-फन्दों को छोड़कर निज आत्मा का ध्यान धरो।

आचार्य अमृतचन्द्र समयसार की आत्मख्याति टीका में समागत कलश में लिखते हैं ह्न

(अनुष्टुभ्)

भेदविज्ञानत: सिद्धा: सिद्धा: ये किल केचन।
अस्यैवाभावतो बद्धा बद्धा ये किल केचन ।।१३१।।

(रोला)

अबतक जो भी हुए सिद्ध या आगे होंगे।
महिमा जानो एकमात्र सब भेदज्ञान की ।।
और जीव जो भटक रहे हैं भवसागर में।
भेदज्ञान के ही अभाव से भटक रहे हैं ।।

आजतक जितने सिद्ध हुए हैं; वे सब भेदविज्ञान से ही सिद्ध हुए हैं और जो कोई बँधे हैं; वे सब भेदविज्ञान के अभाव से ही बँधे हैं।

जिसप्रकार जंगल में लगी दावाग्नि सम्पूर्ण जंगल को जला देती है, उसे बुझाने में मेघों की मूसलाधार बरसात के बिना कोई समर्थ नहीं होता; उसीप्रकार पंचेन्द्रियों के विषयों की चाह एक ऐसी आग है कि जो आत्मा के अनन्त दु:खों का एकमात्र कारण है और जिसे ज्ञानरूपी मेघों की वर्षा के अतिरिक्त कोई नहीं बुझा सकता।

इसलिये हे भाई ! पुण्य के फल में प्राप्त होनेवाले अनुकूल विषयों को पाकर हर्षित होना और पाप के फल में प्राप्त होनेवाले प्रतिकूल संयोगों में बिलख-बिलखकर रोना धर्मात्मा सम्यग्दृष्टि का काम नहीं है; क्योंकि अनुकूल-प्रतिकूल संयोग तो पौद्‌गलिक पर्यायें हैं, जो आती-जाती रहती हैं; इनसे हमारा कोई बिगाड़-सुधार नहीं है।

लाख बात की बात तो यह है कि इन संयोगों पर से उपयोग को हटाकर निश्चय के विषयभूत आत्मा को अपने हृदय में स्थापित करो और जगत के सभी मानसिक द्वन्दों और शारीरिक फंदों को छोड़कर अपने आत्मा का ध्यान करो।

हम तो दुनियादारी के कार्यों को ही दंद-फंद समझते हैं; किन्तु यहाँ यह कहा जा रहा है कि अपने आत्मा के ज्ञान-ध्यान विना जो कुछ भी करोगे, वह सब दंद-फंद ही है। तात्पर्य यह है कि शुद्धपरिणति और शुद्धोपयोग के अतिरिक्त जितना भी क्रियाकाण्ड और शुभभावरूप आचरण है, वह सभी दंद-फंद ही है। इसमें पूजा-पाठ, तीर्थयात्रा आदि सभी क्रियाकाण्ड और तत्संबंधी शुभभाव भी आ जाते हैं।

ध्यान रहे, यहाँ धर्म के नाम पर होनेवाले समस्त बाह्याचरण का निषेध किया जा रहा है; एकमात्र आत्मज्ञान, आत्मश्रद्धान और आत्मध्यान को ही धर्म बताया जा रहा है।

17 सितम्बर 2007, मूल्य : 2/– आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

वैराग्य समाचार

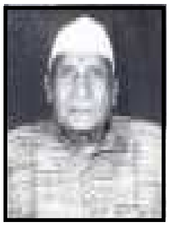

01. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक एवं मंगलायतन के निर्देशक श्री अशोककुमारजी लुहाड़िया के पिताजी **बिजौलिया निवासी श्री चांदमलजी लुहाड़िया** का 2 सितम्बर, 07 को 80 वर्ष की अवस्था में पूना में देहावसान हो गया। आप कुछ दिनों से अस्वस्थ थे।

ज्ञातव्य है कि आप गहन तत्त्वाभ्यासी आत्मार्थी थे। टोडरमल स्मारक में लगनेवाले शिविरों में आप सदैव उपस्थित रहते थे। आपकी स्मृति में 1100/ह्र रुपये प्राप्त हुये हैं।

02. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक श्री विमलकुमारजी शास्त्री (गुढ़ा) जयपुर की मातुश्री **श्रीमती पूनाबाई** जैन का दिनांक 12 अगस्त, 07 को 82 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया है। आप धार्मिक एवं स्वाध्यायप्रिय महिला थीं। आपकी स्मृति में जैनपथ प्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को 201/-रुपये प्राप्त हुये हैं।

03. **गोहाटी निवासी श्री जयचन्दजी पाटनी** का 84 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया है। आप श्री दि. जैन समाज गोहाटी एवं दि. जैन विद्यालय गोहाटी के अध्यक्ष थे। विगत 20 वर्षों से पंचायत के सक्रिय कार्यकर्त्ता होने के साथ-साथ अच्छे मुमुक्षु एवं स्वाध्यायी भी थे।

हार्दिक बधाई

01. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक अरथूना निवासी **श्री अतुलकुमार देवड़िया** हाल ही में भारती विद्यापीठ पूना से एम.बी.ए. करके भावनगर में एस.बी.आई. लाइफ इन्श्योरेन्स कंपनी में बिजनेस डेवलेपमेन्ट मैनेजर के पद पर नियुक्त हुए हैं। जहाँ आपकी सालाना आय 2.5 लाख रुपये है।

02. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक अहमदाबाद निवासी **श्री रत्नेश मेहता** ने 2007 में ही आई.एम.टी.नागपुर से एम.बी.ए. किया है तथा वर्तमान में आप अहमदाबाद में इंडिया इन्फोलाइन लिमिटेड कंपनी में इन्वेस्टमेन्ट एडवाइजर के पद पर कार्य कर रहे हैं। जहाँ आपकी सालाना आय 3.5 लाख रुपये है।

उक्त उपलब्धि हेतु जैनपथप्रदर्शक एवं महाविद्यालय परिवार की ओर से आप दोनों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट–एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

चित्रकला प्रतियोगिता

दशलक्षण महापर्व के पावन अवसर पर, दिव्यध्वनि प्रचार-प्रसार ट्रस्ट, मुंबई द्वारा चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है, जिसमें 12 अक्टूबर, 07 तक प्राप्त होने वाली प्रविष्टियों में से प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करनेवालों को ग्रीष्मकालीन शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में सम्मानित किया जायेगा तथा वीतराग-विज्ञान और जैन पथप्रदर्शक में उनके नाम भी प्रकाशित किये जायेंगे। विषय ह्र

(1) जैन कलर बुक भाग –1 से (क) झंडा (ख) तीर्थंकर आदिनाथ (ग) तीर्थंकर महावीर (घ) तीर्थंकर पद्मप्रभ (ङ) तीर्थंकर पार्श्वनाथ। **(2) जैन कलर बुक भाग – 2** से (क) ध्यानी बच्चा (ख) कलश (ग) छत्र (घ) पीछी (ङ) कमण्डल।

कैसे करें ह्र (1) प्रत्येक पुस्तक में से चार-चार फोटो में उपयुक्त रंग भरें। (पाँच वर्ष से अधिक उम्र के प्रतियोगी को स्वयं चित्र बनाकर भरना अनिवार्य है। पुस्तक के मध्य में चार पेज इसी हेतु दिये गये हैं।)

(2) 8 से 12 वर्ष तक आयु के बालक-बालिकाओं को ह्र देवदर्शन, पूजा-थाली, पहाड़ पर मंदिर, प्रवचन, पाठशाला आदि में से तथा 12 से 25 वर्ष तक आयु वाले बालक-बालिकाओं को आहार, षट् लेश्या, अष्ट प्रातिहार्य, सोलह स्वप्न, रात्रि भोजन त्याग में से चित्र बनाना है।

(3) कोई भी चित्र ए-4 साइज से बड़ा न हो।

(4) तैयार चित्र दिव्यध्वनि प्रचार-प्रसार ट्रस्ट मुंबई के पते पर 12 अक्टूबर तक पहुँच जाने चाहिये।

(5) जैन कलर बुक भाग-1, भाग-2 आपको आपके बुक स्टॉल पर अथवा आराध्य प्रकाशन, मुंबई पर उपलब्ध है।

ह्र अविनाश टडैया, दिव्यध्वनि प्रचार-प्रसार ट्रस्ट, ए-1704, गुरुकुल टॉवर, जे.एस. रोड़, दहीसर (प.), मुंबई ह्र 68, मो. 09221225264

बैंगलौर जाने वाले यात्रियों से निवेदन

कर्नाटक की राजधानी बैंगलोर में श्री दि. जैन ट्रस्ट द्वारा 13 से 20 अक्टूबर, 07 तक 'धार्मिक शिक्षण शिविर' का आयोजन किया है। अत: रंगास्वामी टेम्पल स्ट्रीट स्थित धर्मशाला में इस समय अन्य यात्रियों हेतु ठहरने की व्यवस्था उपलब्ध नहीं हो सकेगी। सभी यात्रियों से निवेदन है कि इन तिथियों में धर्मशाला न पहुँचें। ह्र अनेकान्त जैन

श्री दिगम्बर जैन ट्रस्ट, बैंगलोर

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पं.संजीवकुमार गोधा**,डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन; इतिहास, नेट, एम.फिल एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी**, साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- ४ बापूनगर, जयपुर – ३०२०१५ (राज.)
फोन : (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८
फैक्स : (०१४१) २७०४१२७